जश्न के लिए पूरे फिल्म उद्योग का एकजुट होना अद्भुत है : रणबीर

बॉलीवुड के रॉकस्टार रणबीर कपूर को यह देखकर बेहद खुशी हो रही है कि भारतीय फिल्म उद्योग पूरी तरह एकजुट होकर उनकी पसंदीदा अभिनेत्री रानी मुखर्जी के सिनेमा में 30 वर्षों के शानदार सफर का जश्न मर्दानी 3 के साथ मना रहा है.

रानी मुखर्जी, रणबीर कपूर की डेब्यू फिल्म सांवरिया में उनकी को-स्टार थीं और उनके करियर के शुरुआती दिनों में, जब उन्हें सबसे ज़्यादा सहारे की ज़रूरत थी, रानी उनके साथ खड़ी थीं. यही वजह है कि रणबीर हर फिल्म, हर परफॉर्मेंस में रानी की जीत के लिए दिल से दुआ करते हैं.

रणबीर कपूर ने कहा, 'रानी मेरी पहली फिल्म सांवरिया की को-स्टार थीं और वही पहली शख्स थीं जिन्होंने मुझसे कहा था कि अगर मैं मेहनत करूंगा, तो बहुत आगे जाऊंगा. उस बातचीत को मैं कभी नहीं भूल सकता क्योंकि उस वक्त, जब मुझे इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, उसने मुझे जबरदस्त आत्मविश्वास दिया. मैंने उन्हें एक इंसान के तौर पर बहुत करीब से देखा है, उनके काम को बहुत नज़दीक से देखा है और उनकी गरिमा, आकर्षण और प्रतिभा से हमेशा अभिभूत रहा हूं.

रणबीर कपूर ने कहा, 'रानी मुखर्जी की 30 साल की आइकॉनिक विरासत का जश्न मनाने के लिए पूरे उद्योग का आगे आना वाकई अद्भुत है. मैंने हमेशा महसूस किया है कि रानी सदियों तक याद की जाने वाली कलाकार हैं .भारत की अब तक की सबसे महान अभिनेत्रियों में से एक. उन्होंने अपने काम के ज़रिए हमारी इंडस्ट्री को परिभाषित किया है. उनके प्रोजेक्ट्स और किरदारों के चुनाव ने आज स्क्रीन पर महिलाओं को दिखाने का नजरिया ही बदल दिया है.

रणबीर ने बताया कि रानी अपने सिनेमा के ज़रिए सिर्फ खुशी फैलाना चाहती हैं. वह एक ऐसी एंटरटेनर हैं जिन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी लोगों को खुश करने के लिए समर्पित कर दी है. मेरे लिए यह शब्दों में बताना मुश्किल है कि उनकी फिल्मों का मुझ पर कितना गहरा असर रहा है.

अभिराज मिनावाला द्वारा निर्देशित और आदित्य चोपड़ा द्वारा निर्मित मर्दानी 3,30 जनवरी, 2026 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

धर्मेंद्र के पद्म विभूषण मिलने से गौरवान्वित हूं : हेमा मालिनी

बॉलीवुड अभिनेत्री एवं सांसद हेमा मालिनी ने अभिनेता धर्मेंद्र भारतीय फिल्म उद्योग में उनके अतुलनीय योगदान के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किए जाने पर वह बहुत गौरवान्वित हैं. हेमा मालिनी ने कहा, 'मुझे बहुत गर्व है कि सरकार ने धरम जी के फिल्म उद्योग में बड़े योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें प्रतिष्ठित पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया है.'

हिंदी सिनेमा के 'ही-मैन' के नाम से मशहूर धर्मेंद्र का 24 नवंबर, 2025 को निधन हो गया, जिससे फिल्म जगत को एक अपूर्णीय क्षति हुयी. अपनी सौम्य मुस्कान, पर्दे पर करिश्माई उपस्थिति और छह दशकों से अधिक के करियर के लिए प्रसिद्ध धर्मेंद्र फिल्मी पर्दे पर और पर्दे के बाहर दोनों जगह एक प्रिय हस्ती बने रहे.

भारतीय सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित अभिनेताओं में से एक माने जाने वाले धर्मेंद्र ने 'आया सावन झूम के', 'शोले', 'चुपके-चुपके', 'आई मिलन की बेला' और 'अनुपमा' जैसी कई अन्य फिल्मों में यादगार अभिनय किया. पर्दे पर उनकी बहुमुखी प्रतिभा के अलावा, सिनेमा में उनके अमिट योगदान और दुनिया भर में प्रशंसकों की पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए उनकी प्रशंसा की जाती थी.

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर, गृह मंत्रालय (एमएचए) ने 2026 के पद्म पुरस्कार विजेताओं की आधिकारिक सूची जारी की. ये प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान कला, साहित्य, सामाजिक सेवा, चिकित्सा, शिक्षा और सार्वजनिक सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों के उन व्यक्तियों को सम्मानित करते हैं, जिन्होंने उत्कृष्टता, समर्पण और समाज में दीर्घकालिक योगदान दिया है. देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में गिने जाने वाले पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं: असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए पद्म विभूषण, उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए पद्म भूषण और किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए पद्म श्री.

57 वर्ष के हुए बॉबी देओल

बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता बॉबी देओल आज 57 वर्ष के हो गये. 27 जनवरी 1969 को पंजाबी जाट परिवार में जन्मे बॉबी देओल बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र के छोटे पुत्र हैं. उनकी मां प्रकाश कौर है.बॉबी देओल ने वर्ष 1977 में फिल्म धरम वीर में एक बाल कलाकार के रूप में काम किया.

बतौर मुख्य अभिनेता बॉबी देओल ने वर्ष 1995 में अपने पिता धर्मेन्द्र निर्मित फिल्म बरसात में काम किया. इसी फिल्म से ट्विकल खन्ना ने भी अपने सिने करियर की शुरूआत की थी. इस फिल्म के लिये बॉबी को सर्वश्रेष्ठ पुरुष पदार्पण के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार मिला. इसके बाद वह व्यावसायिक रूप से सफल एक्शन थ्रिलर फिल्मों गुप्त (1997), सोल्जर (1998), बादल (2000), बिच्छू (2000), अजनबी (2001) और हमराज़ (2002) में दिखाई दिए.इसके बाद उनके करियर में मंदी आई, जिसके दौरान उनकी व्यावसायिक रूप से सफल परियोजनाएं अपने (2007), यमला पगला दीवाना (2011), रेस 3 (2018) और हाउसफुल 4 (2019) थीं.

वर्ष 2020 में रिलीज वेब सीरीज आश्रम ने बॉबी देओल के करियर में चार चांद लगा दिए. बॉबी देओल की जबरदस्त एक्टिंग ने इस वेब सीरीज में जान फूंक दी और लोगों के बीच यह सीरीज बहुत मशहूर हो गई. इसमें उन्होंने एक आध्यात्मिक बाबा का किरदार निभाया है.

पहली सीरीज की सफलता के बाद इसके तीन सीजन भी रिलीज किए गए. वर्ष 2023 में प्रदर्शित फिल्म एनिमल में बॉबी देओल अभिनेता रणबीर कपूर के साथ नजर आए थे. बॉबी देओल ने इस फिल्म में शानदार अभिनय किया.इसके बाद बॉबी देओल ने कंगुआ, डाकू महाराज और हाउसफुल 5 में काम किया. बॉबी देओल की आने वाली फिल्मों में अल्फा, और 'जन नायकन' शामिल है.

विजय और रश्मिका की वीडी 14 को मिला टाइटल 'राणा बाली'

विजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना की फिल्म वीडी 14 को 'राणा बाली' टाइटल मिला है. 19वीं सदी के भारत में आधारित यह पैन-इंडिया फिल्म असली ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है. यह विजय देवरकोंडा और माइथ्री मूवी मेकर्स की साथ में तीसरी फिल्म होगी. फिल्म का संगीत आइकॉनिक म्यूज़िक डायरेक्टर अजय-अतुल ने दिया है.

पैन-इंडिया सिनेमा के सबसे टैलेंटेड स्टार्स में से एक, विजय देवरकोंडा हमेशा अपने प्रोजेक्ट्स के जरिए फैंस को एक्साइटेड रखते हैं. अपनी जबरदस्त स्क्रीन प्रेजेंस और एक्टिंग स्किल्स से हर फिल्म में चार चाँद लगाने वाले विजय अब राहुल सांकृत्यायन के डायरेक्शन में बनी अपनी अगली फिल्म

'राणा बाली' के साथ बड़े पर्दे पर लौट रहे हैं. काफी महीनों की इंतजार और बढ़ते उत्साह के बाद, मेकर्स ने फिल्म का टाइटल और रिलीज़ डेट के साथ एक ग्लिम्प्स शेयर किया. इस फिल्म का नाम 'राणा बाली' है, जिसमें लीड रोल में विजय देवरकोंड़ा और रश्मिका मंदाना हैं. यह फिल्म 11 सितंबर 2026 को दुनियाभर में रिलीज़ होने वाली है. फिल्म 'राणा बाली' 19वीं सदी में सेट है और 1854 से 1878 के बीच हुई असली ऐतिहासिक घटनाओं से प्रेरित है. इसे एक बड़े पैमाने पर पैन-इंडिया प्रोजेक्ट के रूप में बनाया जा रहा है. ग्लिम्प्स में 'कर्स्ड लैंड' और उसके हीरो को दिखाने से पहले, मेकर्स ने भारत पर ब्रिटिश राज की बेरहमी को जबरदस्त विज़ुअल्स और जोरदार कहानी के साथ पेश किया है. राहुल सांकृत्यायन की नैरेशन में दिखाया गया है कि कैसे उपनिवेशी नीतियों ने देश में कष्ट बढ़ाया.

टेलीविजन हलचल

एण्डटीवी के कलाकारों की डेली 'सीक्रेट किट'!

लंबे शूटिंग आवर्स, एक के बाद एक सीन और बिना रुके भागदौड़ एण्डटीवी के कलाकारों की जिंदगी किसी रोलर कोस्टर से कम नहीं है. ऐसे में अगर कुछ ज़रूरी चीज़ें साथ न हों, तो दिन थोड़ा मुश्किल हो सकता है. इसलिए एण्डटीवी के हमारे पसंदीदा सितारे अपने साथ रखते हैं कुछ ऐसी चीजें, जो उन्हें सेट पर फ्रेश, फोकस्ड और फुल-ऑन एनर्जेटिक बनाए रखती हैं. फिर चाहे सेल्फ केयर की चीजें हों, ऑर्गनाइज्ड रहना हो या पर्सनल गुड लक चार्म. एण्डटीवी के कलाकारों- सीरत कपूर ('घरवाली पेड़वाली' की सावी), हिमानी शिवपुरी ('हप्पू की उलटन पलटन' की कटोरी अम्मा) और रोहिताश्व गौड़ ('भाबीजी घर पर हैं' के मनमोहन तिवारी) ने उन चीजों के बारे में बताया, जिसके बिना वो घर से बाहर कदम नहीं रखते. 'घरवाली पेड़वाली' में सावी का किरदार निभा रहीं सीरत कपूर कहती हैं, 'मेरा मानना है कि अगर आप पहले से तैयार हों, तो दिन अपने आप शांत और कॉन्फिडेंट रहता है. मेरी पानी की बोतल हमेशा मेरे साथ रहती है-लंबे शूटिंग आवर्स में हाइड्रेट रहना मेरे लिए बिल्कुल भी समझौते वाली बात नहीं हैं.

ज़ी टीवी की खास पेशकश, 'बधाई हो बेटी हुई है'

नेशनल गर्ल चाइल्ड डे के मौके पर ज़ी टीवी ने 'बधाई हो बेटी हुई है' नाम की एक दमदार और दिल को छू लेने वाली फिल्म पेश की है. यह फिल्म बेटी के जन्म की खुशी मनाने और समाज में अब भी मौजूद बेटे-बेटी की सोच पर सवाल उठाने के लिए बनाई गई है. यह फिल्म ज़ी टीवी के शो 'गंगा माई की बेटियां' में चैनल की उसी सोच से प्रेरित है, जहां एक महिला को बेटे को जन्म ना देने की वजह से घर से निकाल दिया जाता है, लेकिन वह हिम्मत और मजबूत इरादों के साथ अकेले अपनी तीन बेटियों की परवरिश करती है. यही सोच इस बात को और पक्का करती है कि बेटी का जन्म खुशी की वजह होना चाहिए, सवाल नहीं, और यही बात इस कैंपेन की शुरुआत से, स्क्रिप्टिंग और आइडिया के लेवल से ही इसकी नींव बन गई. 'बधाई हो बेटी हुई है' की शुरुआत धरा के जन्म से होती है, जो अपने घर की तीसरी बेटी है. दो बेटियों के बाद उसके माता-पिता बेटे की उम्मीद कर रहे थे और धरा के आने पर उसके पिता के चेहरे पर साफ निराशा नजर आती है. उनकी अधूरी उम्मीद धीरे-धीरे धरा से उनकी दूरी बन जाती है. वह उसकी मौजूदगी को नजरअंदाज करने लगते हैं और उसे वो प्यार, हौसला और मौके नहीं देते, जिसकी वह हकदार है.

करजत में शांति की राह पर शिल्पा शिंदे, प्रकृति के बीच बिता रहीं सुकून भरे पल

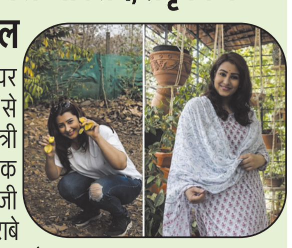

एण्डटीवी के लोकप्रिय शो 'भाबीजी घर पर हैं 2.0' में अंगूरी भाबी के किरदार से दर्शकों का दिल जीतने वाली अभिनेत्री शिल्पा शिंदे इन दिनों पर्द से दूर एक बिल्कुल अलग और सुकूनभरी जिंदगी जी रही हैं. शहर की भागदौड़ और शोर-शराबे से दूर, शिल्पा ने करजत स्थित अपने फार्महाउस को अपना सच्चा आशियाना बना लिया है. शिल्पा शिंदे ने यह फार्महाउस खुद अपने सपनों से संवारा है, जो अब सिर्फ एक रिहायशी जगह नहीं बल्कि उनका जीवन-दर्शन बन चुका है. हाल ही में उन्होंने खेती की ओर रुख किया है और अपना ज्यादातर समय पौधों की देखभाल, सब्ज़ियाँ उगाने और मिट्टी से जुड़ने में बिता रही हैं. हरियाली के बीच सुबह की सैर, खेतों में काम और प्रकृति के साथ समय बिताना उनके लिए मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन का जरिया बन गया है. अनुभव साझा करते हुए शिल्पा शिंदे ऊर्फ अंगूरी भाबी कहती हैं, 'करजत में अपना फार्महाउस बनाना मेरे जीवन के सबसे संतोषजनक अनुभवों में से एक रहा है. मैं हमेशा एक ऐसी जगह चाहती थी जो पूरी तरह मेरी हो- शांत, स्थिर और शहर की दौड़-भाग से दूर.

कृषि जगत

सफल मधुमक्खी पालन के उपाय

मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें सफलता का मुख्य आधार सही तरीके से पालन करना है. सबसे पहले मधुमक्खी की अच्छी जाति का चयन करना आवश्यक है. स्थानीय जलवायु और फूलों की उपलब्धता के अनुसार उच्च उत्पादक मधुमक्खी जातियों को चुनें. छत्तियाँ (बीहाइव्स) मजबूत, स्वच्छ और रोग-मुक्त होनी चाहिए. छत्तियों का स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ धूप पर्याप्त मिले, हवा का प्रवाह ठीक हो और पानी की सुविधा पास में उपलब्ध हो.

मधुमक्खियों को नियमित रूप से निरीक्षण करना अत्यंत आवश्यक है. छत्तियों की सफाई, छत्तियों के फ्रेम और रानी की स्थिति की जांच समय-समय पर करनी चाहिए. अगर कोई रोग या कीट का संक्रमण दिखे तो तुरंत उपचार करें. इसके अलावा, मौसम के अनुसार फूलों की उपलब्धता के आधार पर छत्तियों को स्थानांतरित करना लाभकारी होता है. ग्रीष्मकाल में फूलों की भरपूर उपलब्धता होती है, जबकि शीतकाल में मधुमक्खियों को अतिरिक्त फीडिंग की आवश्यकता पड़ सकती है.

भोजन और पानी की व्यवस्था हमेशा सुनिश्चित करनी चाहिए. प्राकृतिक पराग और रस के अलावा, आवश्यकता पड़ने पर चीनी का पानी या विशेष फीडिंग माध्यम का उपयोग किया जा सकता है. छत्तियों के आसपास ध्वनि, प्रदूषण और अन्य परेशानियों से बचाव करना जरूरी है, क्योंकि इससे मधुमक्खियों की उत्पादकता प्रभावित होती है.

मधुमक्खियों का रानी चयन और छत्तियों का विस्तार भी नियमित रूप से करना चाहिए. स्वस्थ रानी होने पर ही मधुमक्खियाँ अच्छी संख्या में रहती हैं.

सीता फल : सेहत और लाभ का खजाना

सीता फल, जिसे अंग्रेज़ी में पपिता कहा जाता है, एक बेहद पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक फल है. यह न केवल खाने में स्वादिष्ट होता है, बल्कि शरीर के लिए भी कई प्रकार से लाभकारी है. इसमें पाए जाने वाले विटामिन, मिनरल और एंज़ाइम शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं. सीता फल पूरे साल उपलब्ध होता है और इसे कच्चा या पका दोनों रूपों में इस्तेमाल किया जा सकता है.

सीता फल में विटामिन सी , विटामिन ए, फाइबर और पोटेशियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है. यह पाचन तंत्र के लिए विशेष रूप से लाभकारी है. इसमें पपाइन नामक एंज़ाइम पाया जाता है, जो भोजन को जल्दी पचाने में मदद करता है. इसलिए कब्ज और अपच जैसी समस्याओं में यह फल अत्यंत उपयोगी है. इसके नियमित सेवन से पेट से जुड़ी बीमारियों का खतरा कम होता है.

सीता फल हृदय स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है. इसमें मौजूद पोटेशियम रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करता है और हृदय रोगों के जोखिम को कम करता है. विटामिन ए और सी की उच्च मात्रा आंखों की रोशनी बनाए रखने और दृष्टि सुधारने में सहायक होती है. साथ ही, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट शरीर से हानिकारक पदार्थों को बाहर निकालते हैं, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है.

यह फल डायबिटीज़ और मोटापे के नियंत्रण में भी सहायक माना जाता है. इसका कम कैलोरी और उच्च फाइबर वाला होना इसे डायबिटीज़ रोगियों के लिए भी सुरक्षित बनाता है. सीता फल का नियमित सेवन शरीर की सूजन, संक्रमण और एलर्जी जैसी समस्याओं से बचाव करता है. इसके अलावा, इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाए रखने में मदद करते हैं.

सीता फल के अन्य लाभों में हड्डियों को मजबूत बनाना, ऊर्जा बढ़ाना और इम्यूनिटी सुधारना शामिल है. यह बच्चों और बुजुर्गों दोनों के लिए फायदेमंद है. इसे सीधे फल के रूप में खाया जा सकता है या स्मूदी, जूस और सलाद में शामिल किया जा सकता है.

निष्कर्ष: सीता फल सिर्फ स्वादिष्ट नहीं बल्कि स्वास्थ्यवर्धक भी है. यह पाचन सुधारता है, हृदय रोग, डायबिटीज़, संक्रमण और आँखों की समस्याओं से बचाव करता है. नियमित सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और ऊर्जा स्तर ऊँचा रहता है. इस प्रकार, सीता फल एक सस्ता, आसानी से उपलब्ध और अत्यंत लाभकारी सुपरफूड है.

गन्ने की खेती : किसानों के लिए लाभ और अवसर

गन्ना भारत की प्रमुख फसलों में से एक है और इसे शहद की फसल के रूप में भी जाना जाता है. गन्ने की खेती छोटे और बड़े दोनों प्रकार के किसानों के लिए लाभकारी होती है क्योंकि इसकी मांग लगातार बनी रहती है. गन्ना मुख्यत: चीनी उद्योग और रस बनाने वाले यूनिट्स के लिए उगाया जाता है. भारत में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और पंजाब जैसे राज्यों में गन्ने की खेती अधिक होती है.

गन्ने की खेती का लाभ किसानों के लिए कई रूप में होता है. एक हेक्टेयर क्षेत्र में औसतन 60 से 80 टन गन्ना पैदा होता है, जिसका भाव सरकारी और निजी मिलों में 3000 से 4000 रुपये प्रति क्विंटल तक रहता है. इससे एक हेक्टेयर क्षेत्र से किसानों को लगभग 1.8 लाख से 3 लाख रुपये तक की आमदनी हो सकती है. इसके अलावा, गन्ने की खेती में फसल के अवशेष जैसे बागास (गन्ना का बायोमास) का उपयोग पशु चारे और बिजली उत्पादन में भी किया जाता है, जिससे अतिरिक्त आय का साधन बनता है. हालांकि गन्ने की खेती में कुछ लागतें भी शामिल होती हैं. बीज, खाद, कीटनाशक, पानी और मजदूरी पर खर्च आता है. औसतन एक हेक्टेयर क्षेत्र में 50,000 से 70,000 रुपये तक की लागत आती है. इसके बावजूद, गन्ने की आय लागत से कई गुना अधिक होने के कारण यह किसानों के लिए आकर्षक फसल मानी जाती है.

गन्ने को मुख्य रूप से स्थानीय चीनी मिलों, जूस और गुड़ बनाने वाले उद्योगों में बेचा जाता है. किसान सीधे मिलों को अपने गन्ने बेचते हैं, जिससे उन्हें समय पर भुगतान मिलता है. कुछ किसान सहकारी समितियों के माध्यम से भी गन्ना बेचते हैं, जिससे मूल्य में स्थिरता और सुरक्षा मिलती है. इसके अलावा, कुछ गन्ना किसान छोटे स्तर पर रस और गुड़ भी तैयार कर स्थानीय बाजार में बेचते हैं, जो उनकी आय को और बढ़ा देता है.

गन्ने की खेती में सिंचाई की सुविधा, मिट्टी की उर्वरता और मौसम का प्रभाव काफी महत्वपूर्ण है. अच्छी देखभाल, समय पर खाद और कीटनाशक का इस्तेमाल, तथा बीज और कटाई की सही तकनीक अपनाने से फसल की पैदावार और गुणवत्ता दोनों बढ़ती हैं.

आय और रोजगार देता सूरन का कारोबार

सूरन, जिसे अंग्रेज़ी में एरोबोट कहा जाता है, भारत में एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसल मानी जाती है. यह फसल विशेष रूप से हिमालयी और पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक उगाई जाती है, लेकिन अब मैदानी क्षेत्रों में भी इसकी खेती बढ़ रही है. सूरन का उपयोग मुख्य रूप से सब्ज़ी के रूप में और औषधीय गुणों के लिए किया जाता है. इसकी मांग देश के विभिन्न शहरों और मंडियों में लगातार बनी रहती है, जिससे यह किसानों के लिए लाभकारी फसल साबित होती है.

सूरन की खेती से किसानों को अच्छा लाभ मिलता है. प्रति हेक्टेयर औसतन 15 से 25 टन सूरन की पैदावार होती है. अगर इसे स्थानीय मंडियों में 30 से 40 रुपये प्रति किलो के भाव से बेचा जाए तो किसानों की आय लगभग 4.5 लाख से 10 लाख रुपये तक हो सकती है. इसके अलावा, सूरन की खेती में कटाई के बाद बची हुई पत्तियाँ और जड़ें खेत में जैविक खाद के रूप में उपयोग की जा सकती हैं, जिससे खेती की लागत और भी कम हो जाती है.

हालांकि, सूरन की खेती में कुछ प्रारंभिक लागतें भी होती हैं. इसमें बीज या जड़ें, खेत की तैयारी, खाद, कीटनाशक, सिंचाई और मजदूरी शामिल है. औसतन एक हेक्टेयर क्षेत्र में यह लागत 1.5 लाख से 2 लाख रुपये तक हो सकती है. इस निवेश के मुकाबले पैदावार और बाजार में मांग अधिक होने के कारण सूरन की खेती अत्यंत लाभकारी मानी जाती है.

सूरन को मुख्य रूप से स्थानीय और राज्य स्तरीय मंडियों में बेचा जाता है. किसान सीधे थोक बाजारों या उपभोक्ता तक सूरन बेचकर अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं. कुछ किसान सूरन को प्रसंस्कृत कर पैकेजिंग के माध्यम से शहरों में भी भेजते हैं, जिससे उनकी आय और बढ़ जाती है. इसके अतिरिक्त, सूरन की खेती में सामूहिक रूप से खेती करने वाले किसानों के लिए सहकारी समितियों के माध्यम से बिक्री करना भी लाभकारी होता है, क्योंकि इससे मूल्य स्थिर रहता है.

सूरन की खेती में मिट्टी की उर्वरता, जलवायु और सिंचाई की सुविधा महत्वपूर्ण होती है. अच्छी देखभाल, समय पर खाद और कीटनाशक का उपयोग, तथा उचित कटाई तकनीक अपनाने से पैदावार और गुणवत्ता दोनों बेहतर होती हैं. सूरन की खेती किसानों के लिए न केवल आय का स्रोत है बल्कि रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाली महत्वपूर्ण फसल भी है.